दिनांक :- 10-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा।

लेखक का नाम :- डॉ॰ फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- 12th (अनुशांगिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास (कला)

इकाई :- तृतीय

पत्र प्रथम

अध्याय :- आद्य इतिहास - ह्रासकाल का प्रारंभ
सैंधव सभ्यता के देन —

परवर्ती भारतीय सभ्यता के अधिकांश तत्वों का मूल हमे भारत की इस प्राचीनतम सभ्यता में दिखाई देता है। सैंधव सभ्यता की खोज से हमारे इतिहास को एक सातत्य प्रदान किया है तथा इसकी प्राचीनतम को ई० पू० 3000-2500 तक पहुँचा दिया। प्रारंभ में ऐसा माना जाता था कि आर्यों के आगमन के समय तक लगभग (ई० पू० 1500) भारतीय

संस्कृति के इतिहास में एक हजार वर्षों का व्यवधान है, किंतु सैंधव सभ्यता ने इसे हटा दिया है। पुराणों में भारत की जो पारम्परिक इतिहास वर्णित है यह प्रयत्न के बाद से प्रारंभ होकर महाभारत युद्ध (लगभग 1400 ई० पू०) तक माना जाता है। चूँकि सैंधव सभ्यता प्रत्यौत्तर है। अतः हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सैंधव सभ्यता से लेकर महाभारत युद्ध तक की ऐतिहासिक परम्परा में एक सातत्य (Continuity) है। भारतीय (हिंदू) सभ्यता के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक कलात्मक पक्षों का आदि रूप हमें सैंधव सभ्यता से प्राप्त हो जाता है। सामाजिक जीवन के क्षेत्र में हम चातुर्वर्ण व्यवस्था के बीज सैंधव सभ्यता में पाते हैं। मोहेन जोदड़ो की खुदाई में प्राप्त अवशेषों के आधार पर विद्वानों ने सैंधव समाज को चार वर्गों में बांटा है—

विद्वान, योद्धा, व्यापारी तथा शिल्पकार और श्रमिक। इन्हें हम ब्राह्मण, क्षत्रीय वैश्य एवं शूद्र का पूर्वज कह सकते हैं। आर्थिक जीवन के क्षेत्र में हम पाते हैं कि कृषि, पशुपालन, उद्योग-धन्धो व्यापार-वाणिज्य आदि का संगठित रूप से प्रारंभ सैंधववासियों ने ही किया जिनका विकास बाद की सभ्यताओं में हुआ। यहीं के निवासियों ने बाह्य जगत् से सम्पर्क स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया जो बाद की सभ्यताओं में हुआ जो बाद की शादियों तक विकसित होता रहा। भारतीय आहत मुद्राओं पर अंकित कुछ प्रतीक सैंधव लिपि के चिह्नों जैसे हैं, जबकि साँचे से ढालकर तैयार की गयी मुद्राएँ अपने आकार-प्रकार के लिये सैंधव मुद्राओं की ऋणी हैं। आहत सिक्कों की मानक माप सैंधव बाँटों की माप से मिलती है। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो के बर्तनों मिट्टी की वस्तुओं आदि पर अंकित अनेक चिन्ह आकृतियाँ

प्रतीक पंजाब आदि पंजाब से ईसा पूर्व की प्रारम्भिक शदियों की वस्तुओ पर अंकित मिलते है।

सैंधव सभ्यता की सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव हिन्दु धर्म तथा धार्मिक विश्वासो पर दिखाई देता है। मार्शल ने उचित ही सुझाया है कि हिन्दू धर्म के प्रमुख तत्वो का आदि रूप हमें सैंधव धर्म में प्राप्त हो जाता है। इन्हे हम इस प्रकार रख सकते है।

(1) सैंधव धर्म में मातादेवी का प्रमुख स्थान था। इसी का विकसित रूप बाद में शाक्त धर्म के रूप में दिखाई देता है। सिंधु घाटी के लोगो ने अपने पीछे मातृपूजन की जो परम्परा छोड़ी उसे भारतीय लोगो ने शक्ति देवी ग्राम देवता आदि के रूप में स्वीकार कियातथा वह आज तक सर्वोपरि देवी के रूप में विद्यमान है।

(2) सैंधव धर्म में जिस पुरुष देवता के अस्तित्व

मिलते है उससे ऐतिहासिक काल के शिव का आदि रूप स्वीकार किया गया है। यहाँ से लिंग पूजा के प्रमाण मिलते है कालान्तर में हिन्दू धर्म में इसे ही शिव का प्रतीक मान लिया गया। सैंधव मुद्राओं पर योगासन में बैठे हुए देवता का चित्र मिलता है। इसका विकास कालान्तर में दक्षिणामूर्ति रूपी शिव तथा योगी रूपी बुद्ध की मूर्तियों के रूप में दिखाई पड़ता है। सारनाथ में प्रवचन देते हुए महात्मा बुद्ध की मूर्तियाँ इसी प्रकार की है। सैंधव प्रदेशों में दाढ़ी युक्त नग्न पुरुषों की कुछ मृण्मूर्तियाँ मिली है। ये खड़ी मुद्रा में है। पैरों के बीच थोड़ा अन्तर है तथा भुजायें शरीर के दोनों ओर समान्तर है। इस मूर्ति का विकास बाद में जैनियों के कायोत्सर्ग मुद्रा की मूर्तियों में देखने को मिलता है जिनमें ध्यानावस्थित तीर्थङ्करों से इसी प्रकार दिखाया गया है। मथुरा संग्रहालय में तीर्थङ्करों ऋषभदेव की जो मूर्ति स्थापित

है वह उसी मुद्रा में है। इस प्रकार स्पष्ट है कि शैव धर्म की भाँति बौद्ध तथा जैन धर्मों का आदि रूप भी हमें सैंधव सभ्यता में ही मिल जाता है।

(3) सैंधव सभ्यता में वृक्ष पूजा के प्रमाण मिलते हैं। विभिन्न मुद्राओं पर अंकित पीपल के वृक्ष, टहनी पत्तियों आदि से स्पष्ट है कि पीपल को पवित्र मान कर उसकी पूजा की जाती थी। कालान्तर में हम पाते हैं कि बौद्ध तथा हिन्दू दोनों धर्मों में पीपल को पवित्र मानकर उसकी पूजा की जाती थी। इसी वृक्ष के नीचे बुद्ध को सम्बोधि प्राप्त हुई थी। भरहुत साँची आदि के स्तूपों पर इसका अंकन है। जहाँ तक हिन्दू धर्म का प्रश्न है, पीपल की महत्वपूर्ण धार्मिक मान्यता थी। गीता में भगवान कृष्ण ने अपनी को वृक्षों में अश्वत्थ पीपल बताया है।

अश्वत्थ सर्ववृक्षाणाम् पुराणो में वर्णित है कि जो लोग अश्वत्थ पर जल चढ़ाते हैं उन्हें स्वर्ग प्राप्त होता है। आज भी हिन्दू धर्म ने सैंधव सभ्यता से ही ग्रहण किया।

(५) सैन्धव सभ्यता में विभिन्न पशुओं की धार्मिक गहनता थी। कालान्तर के हिन्दू धर्म में भी हमें पशु पूजा के प्रमाण मिलते हैं। विभिन्न मुद्राओं से ज्ञात होता है कि सिन्धुवासी वृषभ तथा भैंसा को पवित्र मानते तथा उनकी पूजा करते थे। कालान्तर के हिन्दू धर्म में वृषभ का सम्बंधन शिव को जोड़कर उसे पूज्य माना गया। सैंधव शिव के साथ सिंह का भी अंकन है जिसे हिन्दू धर्म में दुर्गा का वाहन माना गया है। सैंधव मुद्राओं से पता चलता है कि नाग पूजा भी होती थी। हिन्दू धर्म में आज भी नाग पूजा प्रचलित है।

(६) सैंधव सभ्यता के लोग जल को पवित्र मानते थे तथा धार्मिक समारोहों के अवसर पर सामूहिक स्नान आदि का महत्व था।

Scanned with CamScanner